INDIAN STREAMS RESEARCH JOURNAL
ISSN NO : 2230-7850
IMPACT FACTOR : 5.1651 (UIF)
VOLUME - 12 | ISSUE - 1 | FEBRUARY - 2022

सनत कुमार कृत 'अग्निशेष' नाटक में सांप्रदायिकता

डॉ. बालाजी गायकवाड
अध्यक्ष हिंदी विभाग,
सिद्धार्थ कला, विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय, बुद्ध भवन, फोर्ट, मुंबई.

'संप्रदाय' किसी धर्म के प्रति आस्था रखने वाले 'समुदाय' को कहा जाता है। 'सांप्रदायिकता' यह शब्द 'संप्रदाय' से ही बना है। किसी समूह द्वारा अपने ही 'संप्रदाय' का कट्टरता से पालन करना और दूसरे समूह के 'संप्रदाय' को नीचा दिखाना, हिंसा करना, 'सांप्रदायिकता' है।

भारतीय समाज विभिन्न जाति, धर्म, अनेक संप्रदायों में बटा हुआ है। प्रत्येक धर्म अपने धर्म का कट्टरता से अनुपालन करता है। कभीकभी - इनमें राजनीतिक उद्देश्य से हिंसा फैलाई जाती है। इस प्रकार की सांप्रदायिक भावनाओं ने हमारे देश में अब तक असंख्य जाने ली है। 'सांप्रदायिकता' को लेकर डॉ. विश्वनाथ पांडेय लिखते हैं, "सांप्रदायिकता का अर्थ है, केवल अपने धार्मिक संप्रदाय का हित सोचना और दूसरे संप्रदायों की उपेक्षा करना। हमारे देश में जब से विभिन्न धर्मावलंबियों के बीच राजनीतिक उद्देश्य से विद्वेष और हिंसा के बीज बोए जाने लगे तब से 'सांप्रदायिकता' शब्द अधिक प्रचलित है।"1 अत: इस बात को हमें स्वीकारना चाहिए कि, इस संप्रदायिकता ने समाज एवं राष्ट्र को क्षति पहुंचाने का कार्य किया है। हमें सांप्रदायिकता जैसे मुद्दों पर विचार करना इसलिए जरूरी है कि, सांप्रदायिकता अब एक समस्या बन गई है। असल में सांप्रदायिकता के मूल में सनातनी मुस्लिम- मुल्लाह और सनातनी हिंदू-ब्राह्मण वर्ग रहा है। इस संदर्भ में सन में 1924 एक बार बेरिस्टरजिन्ना ने बातचीत के दौरान तेज बहादुर सप्रू से कहा था-"सप्रुजी मुझे लगता है कि, मेरे पास हिंदू-मुस्लिम समस्या का उत्तर है। आप लोग अपने यहां के सनातनी ब्राह्मण वर्ग को खत्म कीजिए। हम लोग अपने यहां के मूल्लाओं को खत्म कर देंगे। आप देखेंगे कि देश में पूर्णत: सांप्रदायिक शांति आ जाएगी।"2 प्रमोद कौशिक के इस विचार से इस बात को और पुष्टि मिल जाती है "आज की हिंदू धार्मिकता पतन की ओर व निम्न सीढ़ी पर उतर चुकी हैं और उसका दायित्व मूल रूप से पंडित, पुरोहित, ब्राह्मण वर्ग पर आधारित है। जिन्होंने अपने आर्थिक लाभ को व्यावसायिक रूप प्रदान किया है।" 3

मुस्लिम धर्म विरोधी चलाए गए विभिन्न अभियान जैसे गौ हत्या विरोधसांप्रदायिक आधार पर ,हिंदी उर्दू भाषा विवाद , मुस्लिम लीग की अलगाववादी भूमिका तथा विभिन्न हिंदू संगठनों द्वारा मुस्लिमों को विदेशी ठहराना आदि ,पृथक निर्वाचन क्षेत्र के कारण हिंदू- मुस्लिम इन दो धर्मों के बीच एकता की जगह अलगाव निर्माण होता गया। परिणामतइनके बीच एक दूसरे के :

प्रति घृणा और हिंसा की भावना पनपने लगी। हिंदू संगठनों ने मुस्लिमों को कभी अपना नहीं माना बल्कि उन्हें विदेशी करार देते रहे। इस संदर्भ में विपिन चंद्र अपने विचार रखते हुए लिखते हैं अलगाव और निंदा के दौर,यह घृणा"की शुरुआत थी। जिन्ना और उसके मुस्लिम लीग ने अब तर्क दिया कि, भारत में दो राष्ट्र बसते हैं। हिंदू और मुस्लिम वह एक ही राष्ट्र में नहीं रह सकते। हिंदू महासभा के विनायक दामोदर सावरकर और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के माधव सदाशिव गोलवलकर यह तो मानते थे कि, भारत है तो एक ही राष्ट्र मगर उनकी राय में यह एक हिंदू राष्ट्र ही हो सकता है क्योंकि मुसलमान तो विदेशी है।मुस्लिम संप्रदाय को ..... दयनीय ,दास ,संख्यकों को दब्बूअपने लिए अलग देश चाहिए था और हिंदू सांप्रदायिक ऐसा भारत चाहते थे जहां धार्मिक अल्प और कुल मिलाकर दूसरे दर्जे के जिंदगी जिने की अनुमति हो ।"4 इसकी परिणति सन को देश का विभाजन हुआ उसके 1947 घटनाएं घटित होने लगी। पश्चात निरंतर विवादास्पद

अरुण होता ने सांप्रदायिकता को लेकर ठीक ही कहा है, "आज का विश्व सांप्रदायिकता विष ज्वाला से जर्जरित है। संपूर्ण दुनिया के लिए सांप्रदायिकता सबसे बड़ी चुनौती है। धर्म खतरे में हैं और धर्मनिरपेक्षता प्रबल संकटों का सामना कर रही है। सत्ता के गलियारे में सांप्रदायिकता की लहर छाई हुई है। धार्मिक एवं फासीवादी शक्तियों के लिए सांप्रदायिकता सबसे बड़े हथियार के रूप में इस्तेमाल हो रही है। धार्मिक कट्टरता का विषैला वातावरण सर्वत्र प्रसारित है। अवसरवादिता फलफूल रही - है। धर्मांधता के मकड़जाल में फंसकर आम जनता कराह रही है। छटपटा रही है। धार्मिक उन्माद से निरीह तथा निरपराध जीवंत दग्ध हो रहे हैं। वैमनस्य का भाव पनप रहा है। वैरी भाव दिन दूनी रात चौगुनी बढ़ता जा रहा है। अनास्था बलवती हो रही है। भेदभाव की लंबी दीवारें निर्मित हो रही है। एक दूसरे को अविश्वास की नजर से देखने की प्रवृत्ति बढ़ रही है। मनुष्य के स्वभाव में संदेह कुंडली मार कर बैठने लगा है। कभी गोधरा, तो कभी कौंधमाल और कभी मुंबई में सांप्रदायिकता की लहलहाती शिखा विनाश की लिला रचती है। कहीं मुस्लिमों का नरसंहार, कहीं ईसाईयों की हत्या, तो कहीं हिंदुओं पर हमले जारी रहते हैं। ऐसे में सबसे बड़ी क्षति हो रही है मानवता की। सांप्रदायिकता ना हिंदुओं की हत्या करती है और न मुसलमानों की या ईसाईयों की बल्कि मनुष्य का खून करती है। सांप्रदायिकता का कोई रंग नहीं होता । उसका कोई धर्म नहीं होता। बस ,सांप्रदायिकता होती है।"अत: इन मान्यताओं को हमें स्वीकारना होगा।

सन्दंगे में कई लोग मारे गए हैं में भागलपुर 1989 । कुछ घायल हुए ,सन्में बाबरी मस्जिद की घटना 1992 । इसमें हजारों की संख्या में लोग मारे गए ,गुजरात गोधरा कांड की घटना ,मुंबई ,मालेगाव, अलीगढ़ आदि विभिन्न दंगों का सामाजिक जीवन स्तर पर गहरा प्रभाव रहा है। इन हिंसक सांप्रदायिकता के पीछे धार्मिकआर्थिक और विशेषकर राजनीतिक भावनाएं रही , हैं। इन सांप्रदायिक विवादों के कारण देशहित में क्षती पहुंचने लगी। सांप्रदायिकता की इन समस्याओं का गहरा प्रभाव साहित्यकारों पर रहा इसीलिए हिंदी साहित्य में सांप्रदायिकता को लेकर बड़ी मात्रा में साहित्य निर्माण होने लगा । सांप्रदायिकता ने बीसवीं सदी के उत्तरार्ध में अर्थात ब्यानबे के बाद हमें बुरी तरह प्रभावित किया। इन सांप्रदायिकता से प्रभावित होकर नाटककार सनत कुमार जी ने सन्यह दो नाटक प्रकाशित किए 'नूरा अपाकी लोरी'तथा 'अग्नि शेष'में 2004 , जो हिंसक सांप्रदायिकता के स्वरूप को हमारे सम्मुख रखते हैं।

नाटककार सनत कुमार द्वारा लिखित नाटक 'अग्निशेष' सांप्रदायिकता को केंद्र में रखकर लिखा गये इस नाटक में कुल छह दृश्य है। इसमें प्रमुख पात्र तान्या, शेरपा, भादो, बाबा आदि है। नाटककार इस नाटक के माध्यम से शांति और अमन बनाए रखना चाहते हैं । वे सांप्रदायिक एकता निर्माण करना चाहते हैं ।आज चारों तरफ राजनेता तथा प्रेसिडेंट अपने स्वार्थ के लिए अपनी सत्ता का दुरुपयोग कर गांव के गांव तहस-नहस कर देते हैं ,जिस में कितने बेगुन्हागार मासूमों की जानें चली जाती

है। घर परिवार सब कुछ खत्म हो जाता है। 'अग्निशेष' इस नाटक में सैनिकों द्वारा किए गए हमलों का शिकार तानिया का बेटा 'कुक्कू', शेरपा की बेटी ,भादो का पति हो चुके हैं। इस हमले में बचे हुए लोग एक दूसरे के साथ मिल जुल कर रहकर शांति और अमन बनाए रखना चाहते हैं। शेरपा भादो को कहता है "बेटी, डरो मत। हम तुम्हें साथ रखेंगे । लड़ाई के शिकार हम भी हैं, तुम भी। सभी शिकार हुए लोगों का एक ही परिवार होता है।"5 साथ ही तान्या भी भादो को समझाते हुए कहती हैं "तेरे रहने से हम भी खुश होंगे। इस उमर में किसको बेटे की, बेटी की, पोते- पोती की जरूरत नहीं महसूस होती। हम सब उजाड़ बियाबाँ हैं। सब के कुटुंब- कबीलें, इस लड़ाई में खत्म हो गए ।अब मिलकर एक खूबसूरत बगीचा बनाना है। तुम्हारा बच्चा उसका सबसे खूबसूरत फूल होगा।" 6 भादो प्रेसिडेंट की बेटी है, उसने एक विद्रोही के साथ विवाह किया था। प्रेसिडेंट के सैनिकों द्वारा उस विद्रोही पति को मार दिया गया और सैनिक भादो की खोज में है। भादो के पेट में पलने वाला बच्चा विद्रोही का है। इसीलिए तानिया को विश्वास है कि, भादो का बच्चा हम मिलजुल कर बनाए गए एकता के एक सुंदर बगीचे का सबसे खूबसूरत फूल होगा। राजनेताओं के राजनैतिक स्वार्थ के कारण कितने सारे परिवार ध्वस्त हो जाते हैं, जो नाटक के माध्यम से 'अग्निशेष' लेखक ने विनाश और मृत्यु का तांडव प्रस्तुत किया है। वह कहते हैं"अग्नि शेष नाटक विनाश और मृत्यु के तांडव के बीच जीवन की आकांक्षा है । युद्ध में गांव के गांव परिवार के परिवार समाप्त हो जाते हैं। अकेलेपन के सन्नाटे में लोग विक्षिप्त हो जाते हैं। लेकिन जीने के अदम्य चाह लोगों को पुनः जोड़ती हैं। राख के ढेर में से जीवन का स्फुरण धीरे एक दीवार का -खंडहर में से धीरे, ।...उठना टूटे "जीवन का आविष्कार करते हैं। बिखरे और अकेले पड़ गए लोग पुनः ,हारे-7

हमलावरों ने कितने सारे परिवार को खत्म कर डाला है जिसमें महिलाऔर बच्चे मारे गए । नाटक की नायिका ,बुजुर्ग , तान्या जिसमें तान्या का बेटा भी हमले का शिकार हो चुका है। 'कुक्कू' तानिया अपने बेटी की मृत्यु से अपना संतुलन खो बैठी है। वह हर सैनिक पर अपना गुस्सा उतारना चाहती है। उसके संवाद से यह स्पष्ट होता है कि, किस प्रकार सैनिकों ने जाने ली हैं। वह सैनिक शेरपा से कहती है ".....नफरत करती हूं तुमसे कित्ते लोग मारे हैं तूने? कित्ते बच्चे? कितनी माँए? कित्ते गांव शहर राख में बदल दिए? कित्ते बोल?"8 अपने राजनीतिक स्वार्थ के लिए राजनेता कई बार इस तरह की निचली हरकतें करते हुए हमें दिखाई देते हैं। वे सांप्रदायिकता के जरिए एक दूसरे में फूट डालने का काम करते हैं। समाज में हिंसा फैला कर आगजनी, लूटपाट, बलात्कार आदि । विभिन्न प्रकार के अपराधों को बढ़ावा देकर अपना स्वार्थ साधने का प्रयास करते हैं । यही तो शेरपा तान्या को समझाते हुए कहता है कि "इन सभी घटनाओं के पीछे राजनेता का हाथ होता है।.... खिलाड़ी है वो राजे -महाराजे ......राष्ट्राध्यक्ष और सेनाध्यक्ष हम सैनिक तो आज्ञापालक हैं।"9 सैनिक तो शांति और अमन बनाए रखने की उम्मीद रखता है किंतु राजनेताओं के दिल में भाईचारा नहीं होता है। सैनिक नौकर होता है। आदेश का पालन उसे करना पड़ता है। शेरपा कहता है "जंगल सभ्यता का कायदा। मारो और जियो। मारो या मरो। क्या सैनिक खुश है ? हाय खुशी ? सबसे ज्यादा डरा हुआ, सबसे ज्यादा दयनीय है सैनिक इस पृथ्वी पर। अकेला सैनिक ही, भुखमरी से बचने की कोशिश में रोटी के साथ अपनी खुद की मौत का सौदा करता है।" कहता है दुनिया का कोई भी सैनिक लड़ाई झगड़ा खून खराबा नहीं चाहता। शेरपा तान्या को समझाते हुए कहता है "लोगों में मोहब्बत और भाईचारे का दरिया बहता है। इसके कुछ बूंदे हमारे प्रेसिडेंटों, राजाओं के दिल में बहने लगे तो लड़ाई थम जाएं।"10 हिंदू-मुस्लिम शांति और अमन बनाए रखने के बदले अपनी बर्बादी याद कर क्रोध और घृणा पैदा करने वाली घटनाओं को दुहरा -दुहरा कर लोगों को उन्मत्त बनाकर घृणा की आग में सुलझाया जाता है,उनमें बदले की भावना पनपती है और निर्दोष अबोधों की हत्याएँ हो जाती हैं। इस तरह की बदले की भावना बाबा सह नहीं पाते हैं वे 'तान्या' को कहते

हैं, "बदले की आग ठंडी पड़ जाए। दिल की क्रूरता को संतोष मिल जाए, तो मिल जाए, लेकिन हत्या का जवाब हत्या, यह समझ में नहीं आता।"11

सनत कुमार जी ने इस नाटक के माध्यम से राजनेता एवं प्रेसिडेंट किस प्रकार अपने स्वार्थ के लिए गोला बारूद तथा बम विस्फोट से गांव के गांव तहस-नहस कर देते हैं। चारों ओर हर जगह बसे हुए इस प्रेसिडेंटों का सामना अगर सब लोग मिलजुलकर करते हैं, तो एक दिन ऐसा आएगा जहां शांति अमन लहराएगा। नाटककार क्रांति की चेतना लोगों में अत्याचारी, पीड़ित लोगों में निर्माण करना चाहता है।" विद्रोह की आग कहीं ना कहीं जलनी चाहिए।" छह दृश्योंमें विभाजित नाटक मैं सीमित पात्रों के जरिए सांप्रदायिक कथावस्तु को प्रस्तुत कर नाटक को रंगमंच की दृष्टि से सफल बनाने का प्रयास नाटककार ने किया है। अर्थ प्रधान, भाषा -संवाद एवं काव्य गीतों के जरिए कथावस्तु में गति प्रदान की गई है। आत: सनत कुमार सफल नाटक कृति के सफल नाटककार है।

संदर्भ सूची

1. डॉ.पांडेय शिवनाथ (2010),संप्रदायवाद और हिंदी कथा साहित्य,आस्था पब्लिकेशन, कोलकाता, पृ.15
2. रणसुभे डॉ सूर्यनारायण(1987), देश विभाजन और हिंदी कथा साहित्य संचयन प्रकाशन, कानपुर, पृ.27
3. कौशिक प्रमोद(19 91), अध्यात्मिक समतावाद, हंस, पृ. 37
4. चंद्र बिपन (1999), सांप्रदायिकता, अनामिका पब्लिशर्स, दिल्ली. पृ. 03
5. सनत कुमार (2004) अग्नि शेष, शिल्पायन प्रकाशन, शाहदरा दिल्ली, पृ.36
6. सनत कुमार (2004)अग्नि शेष, शिल्पायन,प्रकाशन, शाहदरा दिल्ली, पृ.37
7. सनत कुमार (2004) अग्नि शेष, शिल्पायन, प्रकाशन,शाहदरा दिल्ली, पृ.09
8. सनत कुमार (2004) अग्नि शेष, शिल्पायन, प्रकाशन,शाहदरा दिल्ली, पृ.19
9. सनत कुमार (2004) अग्नि शेष, शिल्पायन, प्रकाशन,शाहदरा दिल्ली, पृ.19
10. सनत कुमार (2004)अग्नि शेष, शिल्पायन, प्रकाशन,शाहदरा दिल्ली, पृ. 48
11. सनत कुमार (2004) अग्नि शेष, शिल्पायन, प्रकाशन,शाहदरा दिल्ली, पृ.16